# सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

# मार्च - 2015

## अंक योजना - इतिहास (दिल्ली) कोड संख्या 61/1/3

**सामान्य निर्देश : मूल्यांकन करते समय कृपया निम्नलिखित निर्देशों के प्रति सावधानी बरतिए।**

1. मूल्यांकन करते समय कृपया निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़िए तभी किसी भी संशय की स्थिति में मुख्य परीक्षक से स्पष्टीकरण प्राप्त करें।

2. अंक योजना तैयार करते समय पूर्ण सावधानी बर्ती गई है। फिर भी यह ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है कि यह न तो विस्तृत है और नही अन्तिम है। यदि परीक्षार्थी ने कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु अपने उत्तर में दे दिया है जो अंक योजना में प्रश्न के उत्तर के लिए दिये गए बिन्दु से अतिरिक्त है, तो परीक्षार्थी को उसके लिए उपयुक्त अंक दिए जाये (पूर्ण लाभ)। जहाँ भी आवश्यकता पड़े वहाँ परीक्षक अपने ज्ञान तथा अनुभव का प्रयोग करें।

3. अंक योजना में प्रश्न के उत्तर के लिए केवल सुझात्मक मूल्य बिन्दु दिए गए हैं: ये केवल मार्ग दर्शन मात्र के लिए हैं न कि ये ही प्रश्न का पूर्ण उत्तर हैं। परीक्षार्थी अपने शब्दों में उत्तर लिखता है किन्तु सही लिखता है तो उसे इसके लिए उपयुक्त अंक दिए जाँय।

4. कुछ प्रश्न उच्च स्तरीय विचारणीय हो सकतें है। ऐसे प्रश्न आपके लिए विशेष रूप से तारांकित कर दिए गए है। इन सभी प्रश्नों का मूल्यांकन सावधानी पूर्वक किया जाय तथा परीक्षार्थी की समझ एवं विश्लेषणात्मक योगयता की जाँच की जाय।

5. मुख्य परीक्षकों को परीक्षकों द्वारा जाँची गई पहली पाँच उत्तर पुस्तिकाएँ पूरी तरह से जाचनी चाँहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्होंने अंक योजना के निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया है। शेष उत्तर पुस्तिकाए, यह सुनिश्चित करने के पश्चात कि उनके द्वारा जाँची गई उत्तर पुस्तिकाओं में प्रत्येक परीक्षक की जाँच में विशेष अन्तर नहीं है तभी उन्हें शेष उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचने के लिए दी जाँय।

6. मार्किंग न तो अति कठोर हो और ना ही अधिक उदार हो। गलत स्पैलिंग के लिए अंक न काटे जाये। गलत नामों के लिए, विस्तार में यदि कुछ कमी है या छोटी मोटी गलती है या कुछ छूट गया है तो उसके लिए भी अंक न काटे जाँय। उत्तर की शब्द सीमा पार करने पर भी अंक न काटे जाँय।

7. यदि परीक्षार्थी दोनों विकल्पों के उत्तर लिख देता है तो दोनों विकल्पों को पढ़कर जो भी अच्छा हो उसके उपयुक्त अंक दिए जाँय।

8. अनेक उत्तरों के मूल्य बिन्दुओं में विशेष विभाजन किया गया है तो ऐसी स्थिति में परीक्षक विभिन्न विभाजनों में उनकी उपयुक्ता के अनुसार अर्थात यदि उत्तर में परीक्षार्थी की समझ और प्रश्न की सीमा के अनुसार अंक देन के लिए अपने विवेक के अनुसार मूल्यांकन कर सकते हैं।

9. अंक योजना में प्रश्न के उत्तर के लिए केवल सुझात्मक मूल्य बिन्दु दिए गए हैंः ये केवल मार्ग दर्शन मात्र के लिए हैं न कि ये ही प्रश्न का पूर्ण उत्तर हैं। परीक्षार्थी अपने शब्दों में उत्तर लिखता है किन्तु सही लिखता है तो उसे इसके लिए उपयुक्त अंक दिए जाँय। कुछ प्रश्न उच्च स्तरीय विचारणीय हो सकतें है। ऐसे प्रश्न आपके लिए विशेष रूप से तारांकित कर दिए गए हैं। इन सभी प्रश्नों का मूल्यांकन सावधानी पूर्वक किया जाय तथा परीक्षार्थी की समझ एवं विश्लेषणात्मक योगयता की जांच की जाय।

10. मूल्यांकन में सम्पूर्ण अंक पैमाने - 0 से 80 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिन्दुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे 80 अंक दिए जाने चाहिए।

11. सभी तीनों सैटो के लिये अंक योजना अलग-अगल दी गई है।

अखिल भारतीय सीनियर सैकन्डरी सर्टिफिकेट परीक्षा इतिहास

प्रश्न-पत्र-संख्या 61/1/3 (दिल्ली)

अंक योजना 2015

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| 1 | **छठी शताब्दी ई.पू. एक महत्वपूर्ण काल -**<br>(i) इस काल को प्रायः आंरभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग के साथ जोड़ा जाता है।<br>(ii) सिक्कों का विकास आदि<br>(iii) बौद्ध और जैन धर्म का आंरभ<br>(iv) बौद्ध और जैन धर्म के आंरभिक ग्रंथों का संकलन<br>(v) महाजनपद जैसे वज्जि, मगध, कोशल, कुरू, पांचाल, गांधार और अवन्ति का उद्भव<br>(vi) अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन होता था लेकिन 'गण' और 'संघ' के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था।<br>(vii) कुछ राज्यों में भूमि सहित अनेक आर्थिक स्त्रोतों पर राजा गण सामूहिक नियंत्रण रखते थे।<br>(viii) विविध प्रकार के स्त्रोतों में अभिलेख, विषयवस्तु (लेख), सिक्के आदि उपलबध है।<br>(ix) प्रशासनिक व्यवस्था के साथ राजस्व, सेना और नौकरशाही की आविर्भाव<br>(x) शासन के नियम निर्धारण के लिए ब्राह्मणों द्वारा धर्मशास्त्र की रचना की गई।<br>(xi) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>(किन्हीं दो का स्पष्टीकरण) पृष्ठ 28, 29 | 2 |
| 2 | (क) अलवार और नयनार सेतों का मुख्य काव्य संकलन - **नलयिरादिव्य प्रबंधम्**<br>(ख) **तमिल क्षेत्रों के सरदारों द्वारा इनकों की गई मदद -**<br>(i) पल्लवों और पांडयों द्वारा भूमि - अनुदान दिए गए।<br>(ii) चोल शासकों ने विष्णु और शिव के मंदिरों के निर्माण के लिए अनुदान दिए और मंदिरों का निर्माण करवाया। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (iii) पत्थर और धातु से बनी मूर्तियाँ सुसज्जित करवायीं गई।<br>(iv) तमिल वेल्लाल कृषकों ने भी समर्थन दिया।<br>(v) इन्होंने संतों को राजकीय संरक्षण दिया।<br>(vi) चिदम्बरम, तंजावूर और गंगैकोंडचोलपुरम के विशाल मंदिरों का भी उल्लेख किया जा सकता है।<br>(vii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>(किसी एक का उल्लेख) पृष्ठ 145, 146 | 1+1 =2 |
| 3 | **औपनिवेशिक शहरों में भारतीय महिलाएं**<br>**सहयोगात्मक -**<br>(i) पत्र-पत्रिकाओं, आत्मकथाओं और पुस्तकों के माध्यम से मध्यवर्गीय औरतें खुद को अभिव्यक्त करने का प्रयास करती थी।<br>(ii) समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया।<br>(iii) महिलाएं घरेलू और फैक्ट्री मजदूरी के व्यवसाय में आने लगी।<br>(iv) उन्होंने शिक्षिका, रंगकर्मी जैसे व्यवसायों में काम करना शुरू किया और सार्वजनिक स्थानों में दिखने लगी।<br>(v) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>**रूढ़िवादी -**<br>(i) परंपरागत पितृसत्तात्मक कायदे-कानूनों के बदलाव से लोगों में अंसतोष।<br>(ii) औरतों के पढ़ने-लिखने पर रूढ़िवादियों में अंसतोष।<br>(iii) वह पढ़ी-लिखी औरतों को सामाजिक व्यवस्था के लिए भय समझने लगे।<br>(iv) सुधारक भी औरतों को मां और पत्नी की परंपरागत भूमिकाओं में ही देखना चाहते थे।<br>(v) सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की उपस्थिती पर प्रश्न उठाए गए।<br>(vi) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु।<br>दोनों पहलुओं में से एक-एक का उल्लेख पृष्ठ 329 | 1+1 = 2 |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| 4 | **भारत के विभाजन की सुत्रबद्ध करने में संस्मरणों और मौखिक वृंतातो की भूमिका**<br>**सहायक -**<br>(i) इनसे आम लोगों के अनुभवों और घटनाओं का सजीव वृतांत मिलता है जो कि सरकारी दस्तावेजों में पाना नामुमकिन है।<br>(ii) उनके लिए यह सिर्फ़ संवैधानिक विभाजन का मामला ही नहीं था अपितु उनके जीवन में अनपेक्षित बदलावों का वक्त था जिसमें मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक समयोजन की जरूरत थी।<br>(iii) इसके द्वारा बहुरंगी और सजीव वृतांत का पता चलता है। सरकारी दस्तावेजों से नीतिगत दलगतमामले, सरकारी योजनाओं, शरणार्धियों के पुनर्वास के बारे में तो रोशनी पड़ती है लेकिन रोजमर्रा के हालात और अनुभवों के बारे में पता नहीं चलता।<br>(iv) विभाजन का मौखिक इतिहास ऐसे मर्दों - औरतों के अनुभवों की पड़ताल करने में कामयाब रहा है जिनके वजूद को मुख्यधारा इतिहास में नजरअंदाज कर दिया जाता था।<br>(v) संस्मरणों और अनुभवों को समझने में मदद मिलती है।<br>(vi) इससे आम इन्सानों जैसे अमीर और गरीब दोनों के जीवन और कार्यों के बारे में पता चलता है।<br>(vii) आम और शक्तिहीन लोगों के बारे में यह जानकारी देता है।<br>**शंका -**<br>(viii) मौखिक जानकारियों में सटीकता नहीं होती है।<br>(ix) उन घटनाओं का जो क्रम उभरता है वह अकसर सही नहीं होता।<br>(x) सामान्यकरण और सामान्य नतीजो पर पहुंचना मुश्किल होता है।<br>(xi) यह सतही मुद्दों से ताल्लुक नहीं रखते हैं।<br>(xii) मौखिक इतिहासकारों को विभाजन के 'वास्तविक' अनुभवों को 'निर्मित' 'स्मृतियों' के जाल से बाहर निकालने का चुनौतीपूर्ण काम भी करना पड़ता है।<br>(xiii) समय बीत जाने पर लोग घटनाओं को याद नहीं रखते। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (xiv) लोग अपनी निजी पीड़ा दूसरों के बताने में संकोच करते है।<br>(xv) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू<br>किन्हीं चार का (दो सहायक और दो शंकाओं) विशलेषण पृष्ठ 400-402 | 4 |
| 5 | **पाँचवी रिपोर्ट**<br>(i) ब्रिटेन में बहुत से ऐसे समूह थे जो ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार का विरोध करते थे।<br>(ii) भारत में कंपनी के प्रशासन की मांग ब्रिटिश संसद में पेश की गई।<br>(iii) कंपनी के कुशासन और अव्यवस्थित प्रशासन की तर्को के आधार पर आलोचना की गई।<br>(iv) जमींदारों की ज़मीन खोने की बातों को बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है।<br>(v) यह उन रिपोर्टों में से पांचवी रिपोर्ट थी जो भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन तथा क्रियाकलापों के विषय में तैयार की गई थी।<br>(vi) यह रिपोर्ट 1002 पृष्ठों में थी जिसके 800 से अधिक पृष्ठ परिशिष्टों के थे।<br>(vii) इसमें कंपनी के कुशासन और अव्यवस्थित प्रशासन की सूचना थी।<br>(viii) इसमे कंपनी के अधिकारियो के लोभ-लालच और भ्रष्टाचार की घटनाएं थी।<br>(ix) जमींदार लोग अपनी जमीनें खोते जा रहे थे इस बारे में बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया था।<br>(x) राजस्व समय पर नहीं वसूला जाता था।<br>(xi) परपरांगत घराने राजस्व समय पर नहीं देती थी।<br>(xii) सार्वजनिक निर्धारित राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को काफी कठिनाइयां उठानी पड़ी।<br>(xiii) जमींदारों की राजस्व वसूली की असफलताओं का एक कारण यह था कि राजस्व की माँग बहुत ऊँची और नियमित थी जिसे इकट्ठा करना मुश्किल था।<br>(xiv) राजस्व राशि के भुगतान के लिए जमींदारा जानबूझकर चूक करते थे।<br>(xv) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>पृष्ठ 263-265 | 4 |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| 6 | **अकबर के सुलह-ए-कुल वे आदर्श -**<br>(i) सुलह-ए-कुल यानी, पूर्ण शांति और अकबर के प्रबद्ध शासन की आधारशीला।<br>(ii) उसका राज्य भिन्न, नृजातियों और धार्मिक समुदायों का समाविष्ट किए हुए था।<br>(iii) उसके दरबार में हिंदुओं, जैंनो, जरतुश्तियों और मुस्तमानों जैसे धार्मिक समुदायों का समाविष्ट था।<br>(iv) सभी तरह की शांति और स्थापित्व के स्त्रोत के रूप में बादशाह सभी धार्मिक और नृजातीय समूहों में मध्यस्थता रख, न्याय और शांति को सुनिश्चित करता था।<br>(v) सुलह-ए-कुल में सभी धर्मो और मतों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।<br>(vi) सुलह कुल का आदर्श राज्य नीतियों के ज़रिए लागू किया गया।<br>(vii) मुगलों के अधीन अभिजात-वर्ग मिश्रित किस्म का था जिसमे ईरानी, तूरानी, अफ्गानी, राजपूत, दक्खनी सभी शामिल थे।<br>(viii) अकबर ने तीर्थयात्रा (1563) और जजिया (1564) कर को समाप्त कर दिया था क्योंकि यह दोनों कर धार्मिक पक्षपात पर आधारित थे।<br>(ix) साम्राज्य के अधिकारियों को प्रशासन में सुलह-ए-कुल के नियम का अनुपालन करने के लिए निर्देश दे दिए गए।<br>(x) सभी मुगल बादशाहों ने उपासना-स्थलों के निर्माण व रख-रखाव के लिए अनुदान दिए।<br>(xi) ईद, शब-ए-बारात तथा होली जैसे विशिष्ट अवसरों पर दरबार का माहौल जींवत हो उठता था।<br>(xii) अभिजात वर्ग में भर्ती विभिन्न नृ-जातीय तथा धार्मिक समूहों से होती थी।<br>(xiii) अकबर ने राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए।<br>(xiv) शिक्षा और लेखाशास्त्र को ओर झुकाव वाले हिंदू जातियों के सदस्यों को भी पदोन्नत किया जाता था। उदाहरण - अकबर के वित्तमंत्री-टोडरमल | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (xv) अकबर ने ईसाई धर्म के विषय में जानने के लिए जेसुइट पादरियों को आंमत्रित किया।<br>(xvi) धार्मिक ज्ञान के लिए अकबर ने फतेहपुर सीकरी के इबाददखाने मे विद्वान मुसलमानों, हिंदुओं, जैंनो, पारसियों और इसाइयों के धर्म-सिद्धांतो की जानकारी हासिल की।<br>(xvii) अकबर ने अनेक धर्मो, विचारों और सिंद्धातों की जानकारी हासिल की।<br>(xviii) उसने दीन-ए-इलाही की शुरूआत की।<br>(xix) उसने विजातीय जनता को एक शाही संरचना के अंतर्गत शामिल किया।<br>(xx) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>(किन्हीं चार का स्पष्टीकरण) पृष्ठ 232, 233, 245, 250, 251 | 4 |
| 7 | **अभिलेख साक्ष्यों की सीमाओं की आलोचनात्मक परख -**<br>(i) अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।<br>(ii) अभिलेख नष्ट भी हो सकते है जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।<br>(iii) अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता।<br>(iv) बहुत सारे अभिलेखों का अर्थ नहीं निकाला गया है।<br>(v) कई हज़ार अभिलेखों को न ही प्रकाशित किया गया है और न अनुवाद किया गया है।<br>(vi) राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण अभिलेखो को अंकित नहीं किया गया है।<br>(vii) खेती की दैनिक प्रक्रियाऐं और रोजमर्रा की जिंदगी के सुख-दुख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं मिलता है।<br>(viii) अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे।<br>(ix) बहुत से अभिलेख बचाए नहीं जा सके हैं। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (x) अभिलेखों का उदाहरण देकर इसकी सीमाओं को स्पष्ट किया जा सकता है।<br>(xi) अन्य कोई उपयुक्त बिन्दु<br>(किन्हीं चार का स्पष्टीकरण) पृष्ठ 47, 48 | 4 |
| 8 | **हड़प्पा के लोगों की सामाजिक - आर्थिक भिन्नताएं -**<br>(i) **श्वासन**<br>(क) हड़प्पा शवाधानी में, कुछ कब्रों में मृदमाण्ड तथा आभूषण मिले है जबकि अन्यों में कुछ नहीं।<br>(ख) कुछ शवाधानों में पुरूषों और महिलाओं दोनों के आभूषण मिले है।<br>(ii) **विलासिता और उपयोगी वस्तुएं**<br>(क) उपयोगी वस्तुओं में रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं<br>(ख) विलासिता की वस्तुओं में, दुर्लभ और मंहगी स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थो से अथवा जटिल तकनीकों से बनी वस्तुएं मिली है जैसे फ़यॉन्स के पात्र।<br>(iii) दुर्ग और निचले शहर<br>(iv) छोटे और दूसरे तल के घर<br>(xiv) अन्य कोई उपयुक्त बिन्दु<br>((किन्हीं दो का स्पष्टीकरण)) पृष्ठ 9 | 2×2 = 4 |
| 9 | **विजयनगर का विरूपाक्ष मंदिर -**<br>(i) विरूपाक्ष मंदिर एक पुराना शिव का मंदिर है।<br>(ii) विजय नगर के स्थान का चयन वहां विरूपाक्ष के मन्दिर से प्रेरित था।<br>(iii) विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के बाद इसे कहीं अधिक बड़ा किया गया था।<br>(iv) मुख्य मंदिर के सामने बना मण्डप कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलब्ध में बनवाया था। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (v) इसे सूक्ष्मता से उत्कीर्णित स्तंभों से सजाया गया था।<br>(vi) गोपुरम अथवा राजकीय प्रवेशद्वारा अकसर केन्द्रीय देवालयों की मीनारों को बौंना प्रतीत करवाते थे।<br>(vii) गृभगृह<br>(viii) मण्डप तथा लंबे स्तंभों वाले गलियारे भी मंदिर में मिले थे।<br>(ix) **सामाजिक महत्व**<br>(क) देवताओं की मूर्तियां संगीत, नृत्य और नाटकों के कार्यक्रमों को देखने के लिए रखी जाती थी।<br>(ख) देवी-देवताओं के विवाहों को मनाने के लिए उपयोग।<br>(x) विजयनगद शासक भगवान विरूपाक्ष के नाम पर शासन करते थे।<br>(xi) शासक देवताओं से अपने गहन सबंधा के संकेतक के रूप में ''हिन्दू सूरतरण'' का प्रयोग करते थे।<br>(xii) राजकीय प्रतिकृति मूर्तियां मंन्दिरों में प्रदर्शित की जाती थी।<br>(xiii) राजा की मंन्दिरों की यात्राओं को महत्वपूर्ण राजकीय अवसर माना जाता था। जिन पर नायक भी उनके साथ जाते थे।<br>(xiv) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>पृष्ठ 184-186 | 4 |
| 10 | **मूल्य आधारित प्रश्न -**<br>(i) रानी झांसी, तांत्या तोपे, मंगलपांडे और अन्य प्रेरणात्मक लोगों का वीरतापूर्ण संघर्ष।<br>(ii) मातृभूमि के लिए हिन्दू-मुस्लिमों का त्याग/बलिदान<br>(iii) एकता और अंखडता की भावना<br>(iv) मातृभूमि के लिए संघर्ष<br>(v) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (vi) एकता की भावना<br>(vii) राष्ट्रीय अस्मिता और देश के प्रति प्यार<br>(viii) स्वतंत्रता की कामना।<br>(ix) वीर नेताओं की आत्मसम्मान की लड़ाई, पक्षपात और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष।<br>(x) देशभक्ति के लिए औरतों की भूमिका<br>(xii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>(उदाहरण सहित चार का आंकलन कीजिए) | 4 |
| 11 | **मुगल पंचायतों की भूमिका -**<br>(i) गांव की पंचायत में बुजुर्गों का जमावड़ा होता था जिनके पास सम्पति के पुश्तैनी अधिकार होते थे।<br>(ii) यह एक अल्पतंत्र था जिसमे संप्रदायो और जातियों की नुमाइंदगी होती थी।<br>(iii) पंचायत के मुखिया को मुक़द्दम या मंडल कहते थे जिनका चुनाव लोगों की सहमति से होता था।<br>(iv) मुखिया अपने ओहदे पर तभी तक बना रहता था जब तक बजुर्गो का भरोसा था।<br>(v) गावं के आमदनी व खर्चे का हिसाब-किताब मुखिया का मुख्य काम था जो पटवारी की मदद से करता था।<br>(vi) पंचायत का खर्चा गावं के आम खजाने से चलता था जिसमे हर व्यक्ति अपना योगदान देता था।<br>(vii) अधिकारियों की खातिरदारी, प्राकृतिक विपदाओं को निपटना, सामुदायिक कार्यो, बांध बनाना या नहर खोदने का काम खजाने से खर्च किया जाता था।<br>(viii) पंचायतों का जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासित करने जैसे ज्यादा गंभीर दंड देने के अधिकार थे।<br>(ix) ग्राम पंचायत के अलावा गावं में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी।<br>(x) राजस्थान में जाति पंचायतें जातियों के बीच दीवानी के झगड़ों की निपटाती थी। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (xi) राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे प्रांतो में जबरन कर वसूली की अर्जियां दाखिल की गई।<br>(xii) ग्राम पंचायत मसलों की सुनवाई करता था।<br>(xxiii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>(किन्हीं आठ बिंदुओं का स्पष्टीकरण) पृष्ठ 202, 203, 204 | 8 |
| 12 | **गांधीजी और असहयोग आंदोलन**<br>(i) गांधीजी ने राष्ट्रवादी संदेश के लिए अंग्रेजी भाषा की जगह मातृभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।<br>(ii) असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने लोगों को रॉलेट ऍक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड के खिलाफ प्रेरित किया।<br>(iii) उन्होंने खिलाफत आंदोलन को प्रोत्साहन दिया और स्वराज की मांग की।<br>(iv) वह आत्मानुशासन और परित्याग से जन नेता बने।<br>(v) उन्होंने चरखे के द्वारा स्वशासन की अवधारणा को प्रोत्साहित किया।<br>(vi) उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के लिए किसानों, श्रमिकों ओर कारीगरों को भाग लेने को कहा तथा व्यवसायिकों व बुद्धिजीवियों को भी भारत के लिए एकजुटता और प्रतिनिधित्व को बात कही। (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय भाषण का संदर्भ देते हुए)<br>(vii) अहमदाबाद, खेड़ा और चम्पारन के नेतृत्व का उल्लेख<br>(viii) उन्होंने सत्याग्रह को लोकप्रिय बनाया।<br>(ix) असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय- हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर औपनिवेशक सरकार को अंत करने के लिए प्रयास किया।<br>(x) ये बातें औपनिवेशिक भारत में बिलकुल ही अभूतपूर्त थी।<br>(xi) अंहिसा का सिद्धान्त<br>(xii) स्वेदेशी और बहिष्कार आंदोलन | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (xiii) 'गांधीवादी राष्ट्रवाद' की शुरूआत की गई।<br>(xiv) उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता, घर में बुने कपड़े (खादी की बढ़ावा देने) तथा छूआ-छूत को समाप्त करने क साथ औरतों की सामाजिक स्थिति को ऊंचा करने की बात कहीं।<br>(xv) उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार के लिए लोगों से अपील की।<br>(xvi) उन्होंने आम लोगों के पहनावे और जीवन शैली को बल दिया।<br>(xvii) उन्होंने राष्ट्रवादी सिंद्धात को बढ़ावा देने के लिए ''प्रजा मंडलो'' की श्रृंखला स्थापित की।<br>(xviii) उन्होंने महादेव देसाई, वल्लभ भाई पटेल, जे.बी कृपलानी, सुभाष चंद्र बोस अब्दुल कलाम आज़ाद, जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, गोविंद वल्लभपंत, और सी. राजगोपालाचारी जैसे प्रतिभाशाली वर्ग व धार्मिक वर्ग को जोड़ा।<br>(xix) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>कोई आठ बिंदुओं का स्पष्टीकरण पृष्ठ 349-355 | 8 |
| 13 | **सांची की संरचनात्मक और मूर्तिकला की विशेषताएं -**<br>**सरचनात्मक विशेषताएं**<br>(i) बुद्ध के अवशेषों या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान को गाड़े जाने वाले पवित्र स्थान पर स्तूप बनाए जाते थे।<br>(ii) स्तूप का अर्थ एक गोलार्ध लिए हुए मिट्टी के टीले से है जिसे बाद में अंड कहा गया।<br>(iii) धीरे-धीरे इसकी संरचना ज्यादा जटिल हो गई जिसमें चौकोर और गोल आकारो का संतुलन बनाया गया।<br>(iv) अंड एक छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था।<br>(v) हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे। (छत्री)<br>(vi) टीले के चारों और एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती है। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (vii) पत्थर की वेदिकाएं और तोरणद्धार हैं जो किसी बांस के या काठ के घेरे के समान थी।<br>(viii) चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्धार पर खूब नक्काशी की गई थी।<br>(ix) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>किन्हीं चार को स्पष्ट किया<br>**मूर्तिकला की विशेषताएं**<br>(i) तोरणद्धार की मूर्तिकला जातक की कहानियों से ली गई थी।<br>(ii) 'रिक्त स्थान' बुद्ध के ध्यान की दशा तथा 'स्तूप' महापरिनिब्बान का प्रतीक है।<br>(iii) चक्र, बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश का प्रतीक था।<br>(iv) शालभंजिका की मूर्ति के लिए कहा जाता है जिसके छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे।<br>(v) जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने बुद्ध-पूर्व और बौद्ध धर्म से इतर दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया।<br>(vi) यहां जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियां है जैसे हाथी, घोड़े, बंदर और गाय - बैल आदि। हाथी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक माना जाता था।<br>(vii) इन प्रतीकों में कमल दल और हाथियों के बीच बुद्ध की मां माया की मूर्ति है पर दूसरे इतिहासकार उन्हें गजलक्ष्मी मानते है।<br>(viii) कई स्तंभों पर सर्प भी दिखते है जो लोक परंपराओं का हिसा है।<br>(ix) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु<br>किन्हीं चार को स्पष्ट कीजिए। पृष्ठ 95-103 | 4+4 = 8 |
| 14 | **देश का बंटबारा एक सांप्रदायिक राजनीति -**<br>(i) अंग्रेजों ने 'बांटो और राजकरो' की नीति से संप्रदायिकता को बढ़ावा दिया।<br>(ii) मध्य और आधुनिक युगों में हुए हिंदू-मुस्लिम झगड़ों के लंबे इतिहास से जोड़ने पर इतिहासकारों में भी विरोधाभास है। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (iii) मुस्लिम लीग के निर्माण को प्रोत्साहन<br>(iv) 1909 में मुस्लिमों के लिए पृथक चुनाव क्षेत्रों की बात।<br>(v) 1919 की सांप्रदायिक राजनीति जिसमें पृथक चुनाव क्षेत्रों को बढ़ावा दिया गया।<br>(vi) 'तबदील' और 'शुद्धि' की नीतियों का प्रसार<br>(vii) इकबाल के विचार<br>(viii) 1940 में मुस्लिम लीग की स्वायत्तता को मांग का प्रस्ताव।<br>(ix) 1937 चुनाव<br>(x) मुस्लिम लीग का उत्तर-पश्चिमी भारतीय मुस्लिम राज्य की जरूरत पर जोर<br>(xi) जिन्ना की ''पाकिस्तान की मांग''<br>(xii) भारतीय राष्ट्रीय क्रांग्रेस का 'भारत छोड़ो आदोलन' में मुस्लिम लीग का साथ न देना।<br>(xiii) मुस्लिम के लीग के 'केबीनेट मिशन' पर विचार (समूहबद्धता अनिवार्य, संघ से अलग होने का अधिकार, नए चुनावों की व्यवस्था)<br>(xiv) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (Direct Action day) 1946<br>(xv) 1946 के सांप्रदायिक दंगे<br>(xvi) मांऊटबेटन प्लान<br>(xvii) बंटवारे के बाद सांप्रदायिक दंगे<br>(xviii) अन्य कोई महत्वपूर्ण बिंदू।<br>(किन्हीं आठ बिंदुओं का विश्लेषण) पृष्ठ 383 - 391 | 8 |
| **15.** | **द्रौपदी के प्रश्न ने सभा में सबको बेचैन क्यों कर दिया -**<br>(i) बैचेन इसलिए किया क्योंकि वह अपने बड़ों से उस बर्ताव का स्पष्टीकरण मांग कर रही थी। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (ii) वह अपने पति अपने बड़ों से 'दाँव' पर लगने की बात का प्रश्न पूछ रही थी।<br>(iii) पर किसी के पास उसके प्रश्नों के जवाब नही थे।<br>(iv) समस्या का कोई हल नहीं था।<br>(v) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई दो) | |
| 15.2 | **उसके प्रश्न का प्रभाव**<br>(i) सभा के लोगों के पास उसके प्रश्न का उत्तर नहीं था।<br>(ii) उसके प्रश्न ने सभा के लोगों को सीमाओं पर विचार करने पर मजबूर किया।<br>(iii) उसकी वजह से ही वह अपनी और अपने पतियों की स्वतंत्रता की बात कर सकी।<br>(iv) सभा के लोगो के उसके प्रश्न पर अनेक मत थे।<br>(v) इस प्रश्न का हल मुश्किल था।<br>(vi) उसने औरत के दांव पर लगने वाली बात को लोगों को सोचने पर मजबूर किया।<br>(vii) वह आज की औरतों की अवबोध बनी।<br>(viii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई तीन) | |
| 15.3 | **द्रौपदी का प्रश्न प्रशंसनीय क्यों था -**<br>(i) बड़े लोगों की सभा में अपनी परिस्थिति पर उसने प्रश्न किया।<br>(ii) उसने बड़े लोगों को उनकी गलतियों से अवगत करवाया।<br>(iii) उसने उनके अंतकरणः को जागृत किया।<br>(iv) जो हुआ उसके लिए बड़ों ने शर्मिदगी महसूस की।<br>(v) उसको संपति मान कर दांव पर लगाने वाली बात पर प्रश्न उठाया।<br>(vi) उसको सभा में अपमानित करने पर प्रश्न उठाया। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (vii) उसने बड़ों से अपनी गरिमा और सम्मान पर खतरे की बात पर प्रश्न पूछी।<br>(viii) वह समसायिक स्त्री वर्ग का आदर्श बन गई।<br>(ix) वह बुद्धिमता का प्रतीक थी।<br>(viii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु।<br>पृष्ठ | 2+3+7 |
| 16.1 | **गोविन्द वल्लभ पंत का आत्मानुशासन की कला पर जोर -**<br>(i) लोकतंत्र की सफलता के लिए।<br>(ii) निष्ठावान नागरिक बनने के लिए।<br>(iii) समुदाय और मदद को बीच में रख कर सोचने की आदत छोड़नी होगी।<br>(iv) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई दो बिंदु) | |
| 16.2 | **लोकतंत्र की सफलता -**<br>(i) आत्मानुशासन के द्वारा<br>(ii) निष्ठावान नागरिक बनकर<br>(iii) समुदाय और निजी बातों पर विचार न किया जाए<br>(iv) अपने लिए कम ओर औरों के लिए ज्यादा फ्रिक करके<br>(v) खंडित निष्टा का परिहार करके<br>(vi) देश और राज्य के लिए निष्ठा रख कर<br>(vii) बृहतर या दूसरो के हितों का ध्यान रखकर<br>(vii) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई तीन बिंदु) | |
| 16.3 | **अपनी परवाह कम और अन्यों की अधिक परवाह -**<br>(i) खंहित निष्ठा नहीं हो सकती<br>(ii) अन्यों को हितों की परवाह करके | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (iii) राज्य और सरकार की तरफ निष्ठा रख कर<br>(iv) अपने अपव्यय पर अंकुश लगा दूसरो के हितो को ध्यान रख कर<br>(v) अन्य कोई ओर उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई दो बिंदु) पृष्ठ 419 | 2 + 3 + 2 = 7 |
| 17.1 | फ्रांस्वा बर्नियर की किताब का नाम - **''ट्रैवल्स इन मुगल इंपायर''** | |
| 17.2 | **बर्नियर का भारतीय कृषकों का विवरण -**<br>(i) सरकार के उत्पीड़न की वजह से उनमें दरिद्रता<br>(ii) कृषि की बरवादी<br>(iii) किसानों पर अत्याचार<br>(iv) निर्वाह के तरीकों का अभाव<br>(v) कृषकों को बच्चों से भी हाथ धोना पड़ा क्योंकि उन्हें दास बना कर ले जाया गया।<br>(vi) अन्य कोई उपयुक्त बिंदु। | |
| 17.3 | **16वीं शताब्दी में मुगल भारत और यूरोप में विभिन्नताएँ**<br>(i) भारत में निजि भूस्वामित्व का अभाव था जबकि यह सिंद्धात यूरोप में विद्यमान था।<br>(ii) उसने भारत में भूमि पर राजकीय स्वामित्व की बात कही है।<br>(iii) भारत की कृषि भूमि पर लम्बे निवेश व रख-रखाव पर ध्यान नहीं दिया जाता था।<br>(iv) भारत में केवल शिविर-शहर थे।<br>(v) भारत में केवल दो वर्ग थे - अमीर और गरीब<br>(vi) मध्यम वर्ग का अभाव था<br>(vii) राजा ''भिखारियों और क्रूर लोगों का राजा था। | |

| प्रश्न स. | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | अंक विभाजन |
|---|---|---|
| | (viii) इसके शहर और नगर विनष्ट तथा 'खराब हवा' से दूषित थे।<br>(ix) इसके खेत 'झाड़ीदार' तय 'घातक दलदल' से भरे हुए थे।<br>(x) अन्य कोई उपयुक्त बिंदू।<br>(कोई तीन बिंदु) पृष्ठ 131 | 1 + 3 + 3 = 7 |
| 18 | मानचित्र पर अंकित<br>(A) चम्पारन<br>(B) खेड़ा/अहमदाबाद<br>(C) अमृतसर<br>(i) नागेश्वर<br>(ii) विजयनगर | |

61/1/1, 61/1/2, 61/1/3

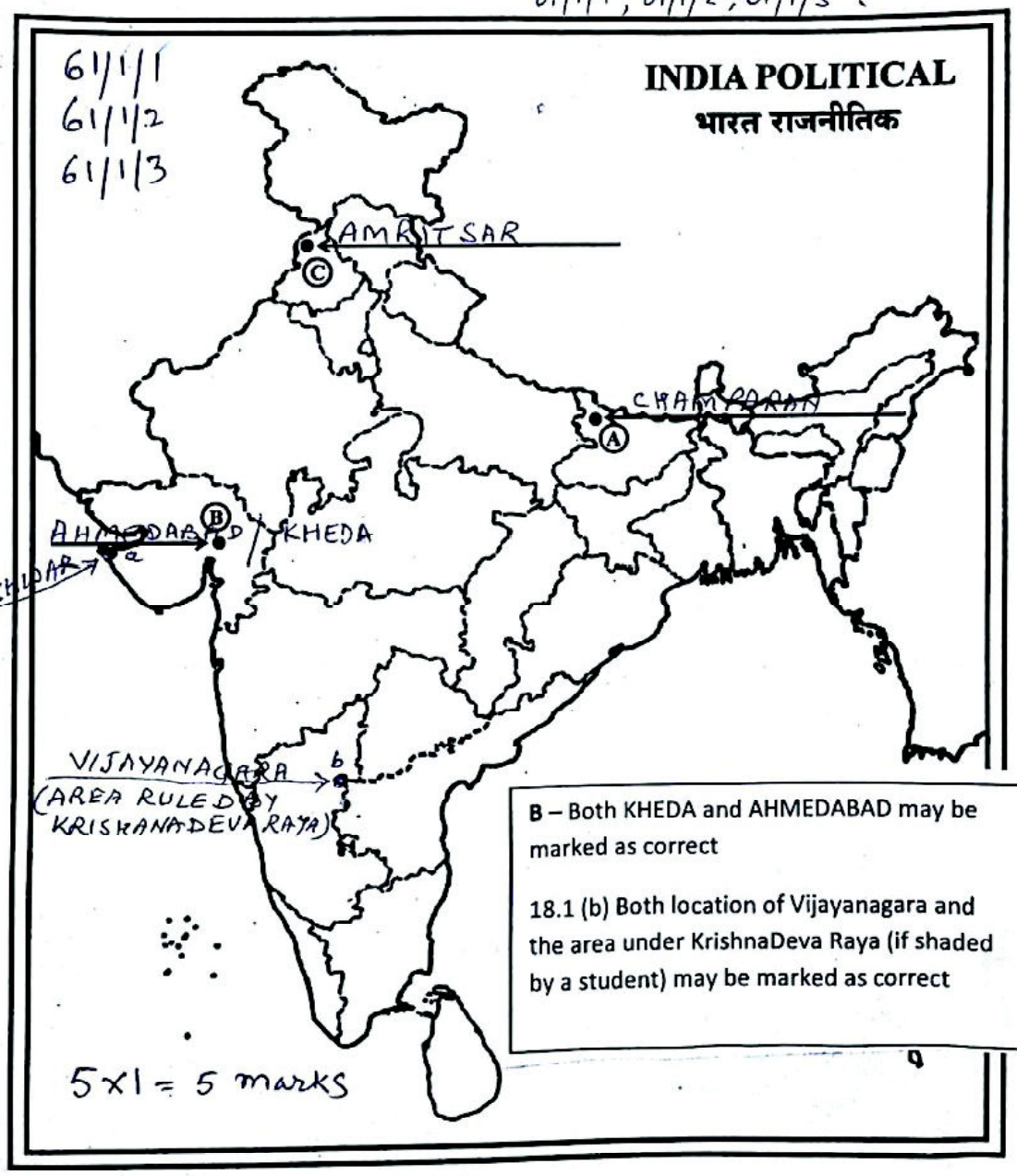




Cut Here ---- यहाँ से काटें ---- Cut Here ---- यहाँ से काटें